12

कथा-कथन कौशल

राम निहोर तिवारी*

आकर्षक कहानियाँ बचपन से ही बच्चों को लुभाती हैं। कथावक्ता विभिन्न सामग्रियों के प्रयोग द्वारा कहानियों में नई जान फूँक सकता है बशर्ते उसे कहानियों के विभिन्न परिदृश्यों की अच्छी समझ हो। प्रस्तुत आलेख कहानियों के प्रति नई समझ को रेखांकित करता है।

कहानी को परिभाषित करते हुए गुरुवर श्री रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था -"नदी जैसे जल-स्रोत की धारा है, मनुष्य वैसे ही कहानी का प्रवाह है।"

कहानी सामाजिक सत्य को उजागर करने वाली सर्वाधिक सशक्त साहित्यिक विधा है, जिसकी समर्थता उसके प्रभावी कथन कौशल में निहित होती है। अगर हम कहानी कथन के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो प्रथम कथा-वक्ता के रूप में भगवान शिव का नाम सामने आता है। भगवान शिव कहानी कहने की कला में इतने निष्णात थे कि मनुष्य क्या पशु-पक्षी तक कहानी सुनकर मुग्ध हो जाते थे। इसीलिए इन्हें कहानी कहने की कला का जनक माना जाता है। इस कड़ी में दूसरा नाम सामने आता है काकभुसुण्डि जी का, जिनकी ख्याति कथावक्ता के रूप में दूर-दूर तक फैली थी और यही कारण था कि इनसे कथा-सुनने के लिए नैमिषारण्य जैसे दूरस्थ वन प्रांतर में भी श्रोताओं की भारी भीड़ होती थी। तीसरे ख्याति लब्ध वक्ता थे शुकदेव जी, जिन्हें यह कला भगवान शिव से प्राप्त हुई थी।

कालांतर में कहानी का कहना-सुनना धार्मिक अनुष्ठान के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और कथा वक्ताओं का एक बड़ा समुदाय पौराणिक कथा सुनाकर जीविकोपार्जन करने लगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी कहने और सुनने का सिलसिला अनादिकाल से चला आ रहा है। ढेरों आंचलिक कहानियाँ श्रुति-परंपरा में आज भी जीवित है। गाँवों में आज भी दो-चार सिद्धहस्त कहानी कहने वाले मिल जाएँगे। ग्रामांचलों में खासकर ठंड के मौसम में अलाव के पास बैठकर इन कथा वक्ताओं की कहानियाँ बड़े चाव से सुनी जाती हैं। ये कहानियाँ या तो राजा-रानी की हुआ करती हैं या भूत-प्रेतों अथवा जंगली जानवरों की। इनके अलावा रात-रात

* सेवा-निवृत्त प्राचार्य, ग्राम एवं पोस्ट-बल्हौड़, वाया-मानपुर, जिला-उमरिया (म.प्र.)

भर चलने वाली हिरावल और सूरज्ञानी जैसी कहानियाँ भी आदिवासियों के बीच खूब प्रचलित हैं।

प्राय: देखने को मिलता है कि जब बच्चा छोटा होता है तभी से दादी अथवा नानी, चंदा मामा जैसी अनेक काल्पनिक कहानियाँ सुनाकर-बच्चे का मन बहलाती हैं और बच्चा कहानी सुनते-सुनते सो जाता है यहीं से बच्चे में कहानी के प्रति लगाव पैदा होता है और उम्र बढ़ने के साथ-साथ कहानी सुनने की उत्सुकता में प्रगाढ़ता आने लगती है। इस रुझान का उपयोग कक्षा-शिक्षण में किया जाना चाहिए।

कहानी बच्चों को आकर्षित करने वाला सबसे प्रभावी तरीका है। भयमुक्त वातावरण निर्माण में जहाँ कहानी का महत्वपूर्ण योगदान है, वहीं कहानी घर और विद्यालय की दूरी कम करने का सुगम माध्यम भी है। यह अनुभवजन्य है कि जहाँ कथा वक्ता कहानी में डूब कर कहानी कहता है वहाँ श्रोता भी लीन होकर कहानी का आनंद लेते हैं। लेकिन कुछ प्रस्तुतियाँ इतनी बोझिल और उबाऊ होती हैं कि श्रोता थोड़ी देर में ही ऊँघने लगता है। निष्कर्षत: कहानी को जीवंत बनाए रखने के लिए असरदार प्रभावी प्रस्तुति आवश्यक है।

आइए यह पड़ताल करने के पूर्व कि हम कहानी कहने की कला को प्रभावी कैसे बना सकते हैं? थोड़ा कहानी के प्रकारों की परख कर लें-

कहानी कहने के आधार पर प्रमुख रूप से दो तरह की होती है-

1. गेय कहानियाँ
2. अगेय कहानियाँ

1. गेय कहानियाँ - ऐसी कहानियाँ जिनकी प्रस्तुति एक विशेष लय में गाकर की जाती है, गेय कहानियाँ कही जाती हैं।

गेय कहानियाँ दो प्रकार की होती हैं-

अ) - अभिनय सहित वाद्य यंत्रों के साथ गाकर प्रस्तुत की जाने वाली कहानियाँ जैसे बुँदेलखंड-बघेल खंड में गाई जाने वाली आल्हा-ऊदल की शौर्य गाथा, जिसे आल्हा के नाम से जाना जाता है।

महाभारत की कहानियाँ - "पंडवानी" जिसकी सफल प्रस्तुति के लिए तीजन बाई और ऋतु वर्मा देश-विदेश तक में अपनी पहचान बना चुकी हैं।

ब) - अभिनय रहित वाद्ययंत्रों के साथ गाकर प्रस्तुत की जाने वाली कहानियाँ जैसे-

- आदिवासियों के बीच प्रचलित हिरावल और सूर ज्ञानी की कहानियाँ।
- घर-घर भिक्षाटन करने वाली बसुदेवा जाति के लोगों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली 'श्रवण कुमार के त्याग-तपस्या की कहानियाँ जिन्हें विशेष धुन में गाकर सुनाया जाता है।

2. अगेय कहानियाँ - ऐसी कहानियाँ जिन्हें बिना गाए प्रस्तुत किया जाता है। इन कहानियों के अंतर्गत - बैताल पचीसी, सिंहासन बत्तीसी, परीकथाएँ तोता-मैना की कहानियाँ, पंचतंत्र की कहानियाँ पौराणिक कथाएँ तथा अन्य आंचलिक कहानियाँ आती हैं। इन कहानियों को ठंड के दिनों में अलाव के पास बैठकर कहा-सुना जाता है। ये कहानियाँ गाँव की धरोहर होती हैं और मौखिक परंपरा में पीढ़ी-दर पीढ़ी जीवित रहती हैं।

संकुल स्तर पर आयोजित चर्चाओं, कहानी कहने वाले सफल कथाकारों से स्थापित संवादों और निरंतर समीक्षा के आधार पर कहानी कहने की निपुणता के लिए निम्न कारक विचारणीय हैं-

1. कहानी चयन
2. बैठक व्यवस्था
3. कहानी कथन

1. कहानी चयन - कहानी की प्रभावी प्रस्तुति के लिए कहानी का चयन महत्वपूर्ण कारक है। ज्ञातव्य है कि सभी कहानियाँ न तो बच्चों को आकर्षित करतीं हैं और न ही आनंददायक होतीं हैं। इसलिए कहानियों का चयन करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं-

- कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित हो।
- बच्चों के बीच कही जाने वाली कहानियों का सुखांत होना आवश्यक है।
- परिचित परिवेश से संबंधित आंचलिक कहानियाँ बच्चों को ज़्यादा आकर्षित करती हैं। अत: इन कहानियों को प्राथमिकता दी जाए।
- कहानी में पात्रों की संख्या सीमित हो, ताकि बच्चों को कहानी के साथ तादातम्य स्थापित करने में कठिनाई न हो।
- कहानी में कथोपकथन छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटे हों, जिससे बच्चे सरलता पूर्वक अर्थ ग्रहण कर सकें।
- कहानी की भाषा सरल और बोधगम्य हो।
- कहानी में पालतू पशुओं, पक्षियों और वन्य-प्राणियों का समावेश छोटे बच्चों के लिए रुचिकर होता है।
- कहानी स्पष्ट उद्देश्य परक हो।
- कहानी किसी-न-किसी मूल्य को प्रतिस्थापित करने वाली हो।
- कहानी के प्रवाह में निरंतरता हो।
- छोटे बच्चों को सुनाई जानेवाली कहानियाँ ज्यादा लंबी न हों ताकि सहजतापूर्वक अपना ध्यान केंद्रित कर सकें।
- जिन कहानियों में बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा कल्पना करने अथवा सोचने के अवसर प्राप्त हों, उनका चयन लाभकारी होता है।

2. बैठक व्यवस्था - बैठक व्यवस्था कथन कौशल को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। कहानी कहते समय बच्चों को अर्द्ध गोले में बैठाएँ, और आप ऐसी जगह बैठें जहाँ से सभी बच्चे आपको पूरी तरह देख सकें।

श्रोता और वक्ता की समुचित बैठक-व्यवस्था कहानी की सफल प्रस्तुति में सहायक सिद्ध होती है।

इस संबंध में कबीर साहब का निम्न दोहा अनुशीलन योग्य है-

"श्रोता तो घर ही नहीं,
वक्ता वकै सो बाद।
श्रोता-वक्ता एक घर,
तब कथनी का स्वाद।"

तात्पर्य यह है कि कहानी कहने वाले और सुनने वाले के मन के तार घनिष्ठता पूर्वक जुड़े हों, तभी कहानी कहने और सुनने का आनंद प्राप्त हो सकता है। सफल प्रस्तुति श्रोता की संपूर्ण सहभागिता चाहती है। इसलिए बैठक व्यवस्था का विशेष ध्यान रख कर कहानी कही जाए।

3. कहानी-कथन - कहानी कथन को रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ विचारणीय बिंदु निम्नानुसार हैं-

- कहानी की सफल प्रस्तुति के लिए कहानी का याद होना निहायत ज़रूरी है।
- कहानी कहते समय कहानी में डूबकर कहानी कहें। कहानी में वक्ता की तन्मयता प्रस्तुति को जीवंत बनाती है।
- कहानी में यथास्थान एकल अभिनय कथन उसके प्रभाव में आशातीत वृद्धि करता है।
- पशु-पक्षियों से संबंधित कहानियों में आवश्यकतानुसार उनकी बोलियों का प्रयोग आकर्षण पैदा करता है।
- कहानी "फिर क्या हुआ?" प्रश्नोत्तर धारा के साथ आगे बढ़ कर "फिर क्या हुआ?" के उत्तर में ही समाप्त हो। ऐसा होने पर कहानी पूरी तरह बाल केंद्रित हो जाती है।
- संवाद बोलते समय ध्वनि का अनुशासन प्रस्तुति की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होता है। कथोपकथन में आवश्यकतानुसार उतार-चढ़ाव की नाटकीयता, अभिव्यक्ति को सुंदर स्वरूप प्रदान करने के साथ-साथ कहानी की संप्रेषणीयता में भी वृद्धि करती है।
- घड़ी की सुईयों पर नज़र टिका कर की गई प्रस्तुति पूरी तरह असफल रहती है। इसलिए सफल वक्ता को समय की सुध-बुध खोकर कहानी कहना चाहिए।
- कहानी, कथन की निरंतरता बिना निष्प्राण हो जाती है इसलिए कहानी की धारा अबाध मंथरगति से आगे बढ़ाएँ, ताकि बच्चे पूरी तन्मयता से कहानी का आनंद ले सकें।
- बच्चों को कहानी समझने का भरपूर अवसर दें।
- कहानी कहने के पूर्व कहानी के उद्देश्य को अच्छी तरह समझ लेना सफल प्रस्तुति के लिए ज़रूरी है।
- कहानी कहते समय सरल शब्दों का प्रयोग करें। आवश्यकता पड़ने पर अपरचित शब्दों का अर्थ समझाना न भूलें, इससे बच्चों के शब्द भंडार में अभिवृद्धि होगी और बच्चे सहज ही नए शब्दों का प्रयोग सीख जाएँगे।
- कहानी कहते समय भाषायी कौशल विकास के साथ-साथ अन्य विषयों के ज्ञान में अभिवृद्धि का उद्देश्य दृष्टिगत रखें।
- कहानी में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कथन के बीच-बीच में "फिर क्या हुआ होगा?" जैसे प्रश्न पूछे जाएँ। ऐसा करने से कहानी के प्रति बच्चे संवेदनशील होंगे और उनकी कल्पनाशक्ति का विकास होगा।

कहानी में बच्चों को साथ लेकर चलना सफल प्रस्तुति का द्योतक है।

- कहानी में कार्डों पर अंकित चित्रों का प्रयोग कथन को सजीव बना देता है।
- बच्चों को कहानी से जोड़ने के लिए पूरक प्रश्न करें। उत्तर देने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें।
- कहानी पूरी होने पर बच्चों को कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें, इससे बच्चों की झिझक दूर होगी और अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होगी।

इस प्रकार हम कहानी-कथन को मज़ेदार, रोचक और उत्साहवर्द्धक बना सकते हैं।

कहानी कहने की कला का विकास निरंतर अभ्यास और साधना का विषय है इसलिए मेरा सुझाव है कि संकुल स्तर पर आयोजित होने वाली बैठकों में परंपरागत कहानी कहने वाले सफल कलाकारों को बुलाकर कहानी सुनें और बच्चों को भी सुनने का अवसर दें। ऐसा करने से कहानी कहने की कला को परखने में मदद मिलेगी और धीरे-धीरे कहानी में डूब कर कहानी कहने की समझ विकसित होगी।

गाँव में कहानी बड़े चाव से सुनी-सुनाई जाती हैं। इन अवसरों का उपयोग करें और कहानी कहने की कला सीखें।

❑❑❑